प्रेम और पुरुष

प्रेम अब कल्पना के सांचे से निकलकर स्वप्न की परिधि को पार करता हुआ यथार्थ धरातल में दिखाई देता है. पुरूष के प्रेम ने भी अर्थ बदल दिया है. आज का पुरूष चाहता है कि अगर जाँच है तो हम प्रेम कर पायेंगे, वरना हम आपके हैं कौन? आज भला कौन पुरूष किसके लिये मरता है? आज का पुरूष बहती हुई सरिता की धारा की तरह अपने आपको संजोता है जहां-जहां उसको किनारा मिलता है तोड़ता, समेटता हुआ आगे बढ़ना चाहता है. प्रेम में सर्वस्व अर्पण करने की परंपरा अब टूट रही है. आज का पुरूष प्रेम में विकास को ढूंढ रहा है. उसे दिल के पैमाने में तौलने के बजाय वह मन और दिमाग से तौलना ज्यादा उचित समझता है. वह वियोग के नाम पर आंसू बहाना नहीं बल्कि जिंदगी में आगे बढ़ना चाहता है.

डॉ. सविता मिश्रा

हरियाणा एवं पंजाब

रचनाधर्म की राह पर

अंजु दुआ जैमिनी

कहानियों, कविताओं के जरिए अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाली अंजु दुआ जैमिनी का जन्म 1969 में सोनीपत *(हरियाणा)* में हुआ था. हिंदी साहित्य में एमए अंजु की अब तक कुल 14 कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं. 'सीली दीवार', 'इस द्वार से उस द्वार', 'सुलगती ज़िंदगी के धुएं', 'क्या गुनाह किया', 'कस्तूरी गंध', 'कंक्रीट की फसल', 'डूबते सूरज से', 'सदियों तक शायद', 'दर्द की स्याही', 'मिट्टू की मिट्ठी', 'अंजुरी भर-भर', 'मोर्चे पर स्त्री' और 'हक गढ़ती औरत' अंजु की प्रमुख कृतियां हैं. अंजु ने कई पुस्तकों का संपादन भी किया है.

काव्य उर्वर लेखनी की स्वामिनी

धीरा खंडेलवाल

कवियत्री धीरा खंडेलवाल का जन्म उन्नाव *(उत्तर प्रदेश)* में हुआ था. इतिहास और ज्योतिष की अध्येता धीरा फिलहाल हरियाणा सरकार की अधिकारी हैं. धीरा का पहला कविता संकलन 1990 में प्रकाशित हुआ था. 'माटी की महक', 'ओस के मोती', 'नेह के दीप', 'कदमों की लय', मुखर मौन, *(कविता संग्रह)*, 'तारों की तरफ' *(हाइकू संग्रह)*, 'ख्यालों के खलिहान' *(गजल संग्रह)* धीरा की प्रमुख कृतियां हैं. धीरा की रचनाएं देश की सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं. धीरा को कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा चुका है.

गीतिका गोयल

बालकथा में रचा बसा मन

गीतिका गोयल को उनकी कहानियों के लिए जाना जाता है. संभल *(उत्तर प्रदेश)* में 1971 में जन्मीं गीतिका जी विज्ञान की विद्यार्थी रही हैं. भौतिक शास्त्र में एमएससी करने वाली गीतिका की इंटीरियर डिजाइनिंग में भी रुचि रही है, पर उन्हें रास आया हिंदी साहित्य. 'जैसी हूं मैं अच्छी हूं', 'चुनमुन की कहानियां', 'नाना-नानी की कहानियां', 'दादा-दादी की कहानियां', 'बर्फ का गोला', 'भूल गए शैतानी', 'किसान की बेटी', 'वाह! बढ़िया है', 'बतख का कुरूप बच्चा', 'गुलाब का फूल', 'उपहार', 'हां या ना', 'स्वर्ग में अमीर' और 'काठ की बच्चिया' गीतिका की प्रमुख कृतियां हैं. गीतिका को रतन शर्मा बाल साहित्य पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार, सीता देवी श्रीवास्तव स्मृति सम्मान और भाउ राव देवरस युवा साहित्यकार सम्मान से नवाजा जा चुका है.

एक संपूर्ण प्रेरक शख्सियत

लीलावती बंसल

नब्बे साल से भी अधिक उम्र में लीलावती बंसल का लेखन *(जन्म: 1918, रोहतक)* निश्चित तौर पर प्रेरणा देता है. लीलावती ने स्कूली शिक्षा कक्षा आठ तक ही ली, बाद की पढ़ाई घर पर ही की. स्वाध्याय से उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी और गुरमुखी भाषाओं का ज्ञान भी हासिल किया. महज 15 साल की उम्र में लेखनी पकड़ लेने वाली लीलावती की प्रमुख कृतियां हैं, 'वीथियां', 'रानी सारन्धा', 'यशमालिका', 'पीर जगाई तुमने', 'शूल और फूल', 'ताप और तुषार', लीलावती को गार्गी सम्मान, भारत गौरव, साहित्य गौरव और साहित्य निधि जैसे सम्मानों से नवाजा जा चुका है.

साहित्य समृद्धि में सतत योगदान

मधु संधू

कहानियों के जरिए साहित्य को समृद्ध करने वाली मधु संधू का जन्म 1948 में अमृतसर में हुआ था. विगत 36 वर्षों से प्राध्यापन से जुड़ी मधु ने तकरीबन 50 शोध प्रबंधों का निर्देशन किया है. पहली कहानी 1998 में प्रकाशित हुई. मधु की कहानी संग्रह 'नियति और अन्य कहानियां' प्रकाशित हो चुका है और 'आवाज का जादूगर' प्रकाशनाधीन है. इसके अलावा दो ग्रंथ 'कहानी शृंखला' एवं 'गद्य त्रयी' का मधु ने संपादन किया है. 'कहानीकार निर्मल वर्मा', 'सातोत्तर महिला कहानीकार', 'हिंदी लेखन कोश' और 'कहानी का समाजशास्त्र' उनके प्रकाशित शोध ग्रंथ हैं.

गीतिका गोयल

बालकथा में रचा बसा मन

गीतिका गोयल को उनकी कहानियों के लिए जाना जाता है. संभल *(उत्तर प्रदेश)* में 1971 में जन्मीं गीतिका जी विज्ञान की विद्यार्थी रही हैं. भौतिक शास्त्र में एमएससी करने वाली गीतिका की इंटीरियर डिजाइनिंग में भी रुचि रही है, पर उन्हें रास आया हिंदी साहित्य. 'जैसी हूं मैं अच्छी हूं', 'चुनमुन की कहानियां', 'नाना-नानी की कहानियां', 'दादा-दादी की कहानियां', 'बर्फ का गोला', 'भूल गए शैतानी', 'किसान की बेटी', 'वाह! बढ़िया है', 'बतख का कुरूप बच्चा', 'गुलाब का फूल', 'उपहार', 'हां या ना', 'स्वर्ग में अमीर' और 'काठ की बछिया' गीतिका की प्रमुख कृतियां हैं. गीतिका को रतन शर्मा बाल साहित्य पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार, सीता देवी श्रीवास्तव स्मृति सम्मान और भाउ राव देवरस युवा साहित्यकार सम्मान से नवाजा जा चुका है.

रंजना जायसवाल

कविताओं से हुई चर्चित

मानव मन की कुशल पारखी रंजना जायसवाल का जन्म 1968 में पड़रौना *(उत्तर प्रदेश)* में हुआ था. शिक्षा-दीक्षा पड़रौना और गोरखपुर में हुई. हिंदी साहित्य की अध्येता रहीं रंजना जी को बचपन से ही कविता से लगाव था. उन्होंने पहली कविता 1980 में लिखी. 'मछलियां देखती हैं सपने', 'दुख पतंग', 'जिंदगी के कागज पर', 'माया नहीं मनुष्य', 'जब मैं स्त्री हूं' *(कविता संग्रह)* और 'तुम्हें कुछ कहना है भर्तृहरि' *(कहानी संग्रह)* रंजना जी की प्रतिनिधि कृतियां हैं. 'स्त्री और सेंसेक्स' शीर्षक से एक लेख संग्रह भी रंजना जी के खाते में है. उनकी कविताएं, कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं.

उत्तर प्रदेश

गीत और गजलों ने बनाया लोकप्रिय

रमा सिंह

गीत और गजल लेखन से अपनी खास पहचान बना चुकीं रमा सिंह का जन्म दीपावली के दिन 1945 में उदयपुर में हुआ था. उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर *(राजस्थान)* से हिंदी साहित्य में एमए रमा जी ने मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ से पीएच.डी की. गीता जी की प्रमुख कृतियां हैं, 'दिनकर के साहित्य में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति' *(शोध प्रबंध)* 'हिन्दी गजल' *(समीक्षा)*, 'सीपियां एहसास की', 'खत खुशबुओं के', 'फाइलों में बंद मौसम', 'भीग गया मन', 'पलकों के साये में' *(गजल संग्रह)*. संप्रति प्राध्यापन से जुड़ीं हुई हैं.

प्रत्येक विधा में पहचान

नीरजा माधव

वाराणसी *(उत्तर प्रदेश)* में रहकर साहित्य साधना कर रहीं नीरजा माधव मूलत: अंग्रेजी साहित्य की विद्यार्थी रही हैं. प्रसार भारती से जुड़ी नीरजा की संगीत में भी गहरी रुचि है. नीरजा जी की 26 से भी ज्यादा कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें प्रमुख हैं, 'प्रथम छंद से स्वप्न', 'प्यार लौटना चाहेगा' और 'प्रस्थानत्रयी' *(कविता संग्रह)*; 'अभी ठहरो, अंधी सदी', 'पथदंश', 'वाया पांडेपुर चौराहा' *(कहानी संग्रह)*; 'यमदीप', 'अवर्ण महिला कॉस्टेबल की डायरी', 'ईहामृग' और 'धन्यवाद सिवनी' *(उपन्यास)*.

बाल मन की नब्ज पर पकड़

हिंदी और अंग्रेजी में धारा प्रवाह लेखनी चलाने वाली इरा सक्सेना का जन्म 1949 में मेरठ *(उत्तर प्रदेश)* में हुआ था. मनोविज्ञान की प्राध्यापिका रहीं इरा जी ने बाल मन को खूब अच्छी तरह पढ़ा है. उनकी रचनाओं में इसकी स्पष्ट झलक मिलती है. 'मनमौजी मामाजी', 'आशा का उदय', 'कथा रत्न', 'गजमुक्ता की तलाश', 'गब्बू ट्रंक', 'टेल्स ऑफ विष्णु' और 'टेल्स ऑफ शिवा' इरा जी की प्रमुख कृतियां हैं. 'चुन्नूदादाज फार्महाउस', 'मामाजी ने मुसीबत पाली' और एक और हादसा इरा जी की प्रकाशनाधीन कृतियां हैं. इरा सक्सेना को विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों, सम्मानों से नवाजा जा चुका है.

इरा सक्सेना

लेखन के विविध रंग

डॉ. मीना अग्रवाल

कहानियों एवं कविताओं के जरिए हिंदी साहित्य संपदा को समृद्ध कर रहीं डॉ. मीना अग्रवाल का जन्म 1947 में हाथरस में हुआ था. एमए,पीएचडी मीना जी को संगीत से भी बहुत लगाव है. प्राध्यापन से जुड़ीं मीना जी की प्रमुख कृतियां हैं, 'अंदर धूप बाहर धूप' *(कहानी-संग्रह)*; 'सफर में साथ-साथ' *(मुक्तक-संग्रह)*; 'आदर्श बाल कहानियां'; 'आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत' (पुरस्कृत); 'जो सच कहे' (हाइकू संग्रह) और 'यादें बोलती हैं' (कविता संग्रह).

दिल छू लेने वाली कहानियां

नमिता सिंह

वरिष्ठ लेखिका नमिता सिंह का जन्म 1944 में लखनऊ *(उत्तर प्रदेश)* में हुआ था. विज्ञान की विद्यार्थी होने के बावजूद नमिता जी ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया. लगभग चार दशक तक प्राध्यापन से जुड़ी रहीं नमिता जी की कहानियां दिल को छू लेने वाली होती हैं. 'खुले आकाश के नीचे', 'राजा का चौक', 'नील गाय की आंखें', 'जंगल गाथा', 'निकम्मा लड़का' और 'कर्फ्यू' नमिता जी के कहानी संग्रह हैं. 'अपनी सलीबें' और 'लेडीज क्लब' उनके उपन्यास हैं.

लेखन के विविध रंग

डॉ. मीना अग्रवाल

कहानियों एवं कविताओं के जरिए हिंदी साहित्य संपदा को समृद्ध कर रहीं डॉ. मीना अग्रवाल का जन्म 1947 में हाथरस में हुआ था. एमए.पीएचडी मीना जी को संगीत से भी बहुत लगाव है. प्राध्यापन से जुड़ीं मीना जी की प्रमुख कृतियां हैं, 'अंदर धूप बाहर धूप' *(कहानी-संग्रह)*; 'सफर में साथ-साथ' *(मुक्तक-संग्रह)*; 'आदर्श बाल कहानियां'; 'आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत' (पुरस्कृत); 'जो सच कहे' (हाइकू संग्रह) और 'यादें बोलती हैं' (कविता संग्रह).

दिल छू लेने वाली कहानियां

नमिता सिंह

वरिष्ठ लेखिका नमिता सिंह का जन्म 1944 में लखनऊ *(उत्तर प्रदेश)* में हुआ था. विज्ञान की विद्यार्थी होने के बावजूद नमिता जी ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया. लगभग चार दशक तक प्राध्यापन से जुड़ी रहीं नमिता जी की कहानियां दिल को छू लेने वाली होती हैं. 'खुले आकाश के नीचे', 'राजा का चौक', 'नील गाय की आंखें', 'जंगल गाथा', 'निकम्मा लड़का' और 'कर्फ्यू ' नमिता जी के कहानी संग्रह हैं. 'अपनी सलीबें' और 'लेडीज क्लब' उनके उपन्यास हैं.